आचार्य मनोज कुमार सक्सेना हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के शिक्षा स्कूल के अधिष्ठाता तथा अध्यापक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं। उन्होंने वाणिज्य निष्णात तथा शिक्षा निष्णात की उपाधि तथा शिक्षा विषय में विद्यावाचस्पति की उपाधि महात्मा ज्योतिबा फुले विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश) प्राप्त की है। वे अध्यापक शिक्षक के रूप में गत 20 वर्षों से विभिन्न संस्थानों में कार्यरत रहे हैं। शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, जनजातीय शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा उनकी रुचि तथा विशेषज्ञता के क्षेत्रों में सम्मिलित हैं। उनके दिशा निर्देशन में पांच शोधार्थियों ने अपनी विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है तथा वर्तमान में छह शोधार्थी अपना शोध कार्य कर रहे हैं। उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित एक राष्ट्रीय शोध परियोजना (2014) 'अनुसूचित जनजातियों की शैक्षणिक अवस्था : प्राप्तियां और चुनौतियां' को हिमाचल प्रदेश के शोध निर्देशक के रूप में पूर्ण किया है। उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित एक और प्रमुख शोध परियोजना (2017) को पूर्ण किया है। वर्तमान में एशिया के कॉमनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित मुक्त शैक्षिक स्रोत के विकास हेतु एक परियोजना पर वे अभी कार्यरत हैं। वे हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला की कार्यकारिणी परिषद् तथा अकादमिक परिषद् के सदस्य तथा शिक्षा स्कूल के स्कूल बोर्ड के अध्यक्ष तथा अध्यापक शिक्षा विभाग की पाठ्य समिति के अध्यक्ष भी हैं।

उनके द्वारा अब तक 5 पुस्तकें तथा 75 शोधपत्र विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जर्नलों में प्रकाशित किए गए हैं। उन्होंने भारत में तथा भारत के बाहर विभिन्न सेमिनारों में लगभग 72 शोध पत्रों को प्रस्तुत तथा उनमें अपना योगदान दिया है। उन्होंने भारत के विभिन्न प्रदेशों में बहुत सी राष्ट्रीय सेमिनारों में मुख्य वक्ता के रूप में अपना उद्बोधन दिया है। वे एम.एड., बी. एड. तथा डी.एड. कार्यक्रमों को मान्यता देने के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की विजिटिंग दल के सदस्य हैं। उन्होंने शैक्षिक तथा सामाजिक कार्यों से थाईलैंड तथा नेपाल देशों की यात्रा की है।

इन अकादमिक कार्यों के अतिरिक्त उन्हें भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा 1988 में राष्ट्रपति स्काउट से अलंकृत किया गया। वे रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के रोटरी युवा नेतृत्व पुरस्कार 1989 से सम्मानित हैं।

अनामिका

₹ 800
ISBN 978-81-7975-940-0

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
एकात्म मानव दर्शन–विविध आयाम
संपादक
मनोज कुमार सक्सेना

अनामिका

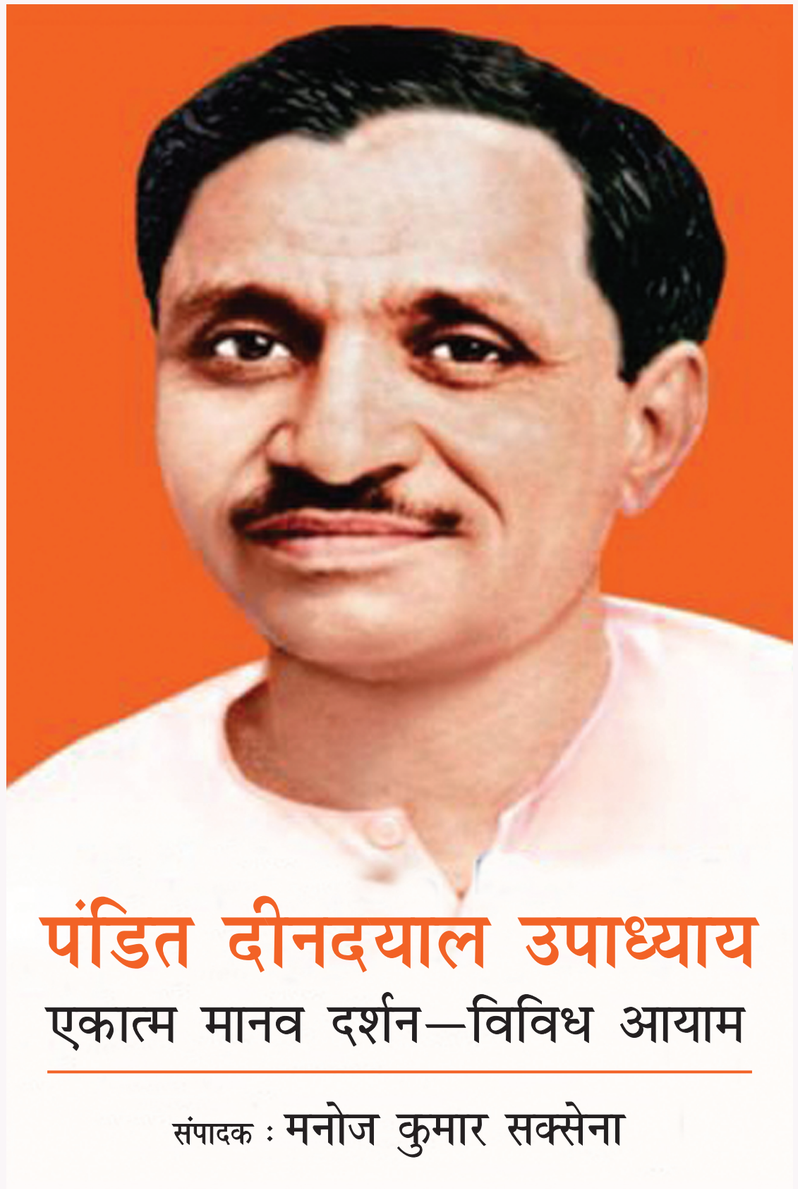

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

एकात्म मानव दर्शन—विविध आयाम

संपादक : मनोज कुमार सक्सेना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति, रचना, लेखन और राजनीतिक सक्रियता को रेखांकित करती हुई यह पुस्तक आधुनिक और समकालिक भारतीय संदर्भ में उदीयमान नव-विमर्श को प्रस्तुत करती है। पुस्तक में विभिन्न आलेख राष्ट्रवादी चिंता से अभिप्रेत हैं। इन आलेखों का संकलन राष्ट्र, स्व और एकात्म मानव दर्शन, अर्थ और स्वतंत्रता जैसे विषय पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि से परिचित कराता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानव दर्शन और उसके विश्लेषण से उभरने वाले अकादमिक विमर्श का रूपायन इस पुस्तक में प्रस्तुत है।

सुमंगलम, आध्यात्मिक राजनीति, वाद एवं दर्शन में भेद करने जैसी नई अवधारणाओं और संकल्पनाओं से अकादमिक विमर्श को समृद्ध करती हुई यह पुस्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कर्तृत्व और विचारों के पुनर्पाठ के लिए प्रेरित करेगी।

विभिन्न लेखकों के आलेख इस पुस्तक को इंद्रधनुषीय वैविध्य एवं वैशिष्ट्य प्रदान करते हैं।

अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड
4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
फोन : 011-23281655, 011-43708938
E-mail: anamikapublishers@yahoo.co.in

यह कथन अनिवार्यतः संप्रेषणीय है कि इन आलेखों में प्रस्तुत तथ्य, विश्लेषण एवं परिणामों की वैधता की जिम्मेदारी संबंधित लेखकों पर है। संपादक और उसके संस्थान का इनसे कोई संबंध नहीं है।

प्रथम संस्करण : 2018
© मनोज कुमार सक्सेना
आई.एस.बी.एन. 978-81-7975-940-0

भारत में मुद्रित

अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 द्वारा प्रकाशित। शिवानी कम्प्यूटर्स, दिल्ली 110093 द्वारा शब्दांकित एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रॉनिका सिटी, गाजियाबाद में मुद्रित।

अनुक्रम

आमुख 5

मनोगत 7

सहयोगी लेखकगण 9

खंड-1

1. एकात्म मानववाद एवं सुमंगलम : विश्व की आवश्यकता 17
   —डॉ. बजरंग लाल गुप्ता

2. पं. दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक एवं सामाजिक दर्शन 38
   —डॉ. प्रयाग नारायण त्रिपाठी

3. भारतीय राष्ट्रत्व का फलित : एकात्म मानववाद 56
   —प्रो. पवन कुमार शर्मा

4. मनुष्यता और वैश्विक चेतना का पोषक है दीनदयाल जी का चिंतन 81
   —प्रो. बल्देव भाई शर्मा

5. 'आध्यात्मिक राजनीति' के प्रेरणा स्रोत : पं. दीनदयाल उपाध्याय 86
   —डॉ. चांद किरण सलूजा

6. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन और शैक्षिक चिंतन 91
   —प्रो. संध्या जी एवं देवी प्रसाद सिंह

7. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 101
   —डॉ. नरेंद्र कौशिक

8. वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में दीनदयाल जी की प्रासंगिकता 106
—डॉ. गौरव सिंह एवं रश्मि चौहान

9. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की सृजनात्मक प्रतिभा 114
—डॉ. लखवीर लैज़ीया

10. एकात्म मानववाद : एक सम्पूर्ण दर्शन 124
—डॉ. विवेक शर्मा

11. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता 131
—डॉ. जे. डी. सिंह

12. एकात्म मानव दर्शन एवं जनजातीय शिक्षा 138
—चंदन आनंद

13. पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानववाद 149
—डॉ. शशि कांत शर्मा

14. तेजस्वी एवं यशस्वी चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय 163
—डॉ. संजय भारतीय एवं डॉ. राम सिंह

खंड-2

15. Pandit Deendayal Upadhyaya's Philosophy and Social Thought 177
—Prof. G. Gopal Reddy

16. Decentralisation : Basic to Politiconomic Worldview of Deendayal 182
—Dr. D. D. Pattanaik

17. Indian Agriculture, Farmers' Interest & Ideology of Pt. Deen Dayal Upadhyay Ji on Sustainable Farming 194
—Dr. Suresh Chand

18. Rethinking and Rebuilding Effective Educational Road Map in the Context of Integral Humanism: A Vision of Pandit Deen Dayal Upadhaya 203
—Dr. J.N.Baliya

10 एकात्म मानववाद : एक संपूर्ण दर्शन

डॉ. विवेक शर्मा

सर्वप्रथम प्रश्न है कि आखिर पं. दीनदयाल उपाध्याय को आज क्यों याद किया जा रहा है। वस्तुतः उनको याद इसलिए किया जा रहा है कि हम पं. दीनदयाल जी के जीवन से प्रेरणा पाकर हम अपने जीवन को और अधिक समृद्धि से राष्ट्र कार्य में लगा सकें। दीनदयाल जी का जीवन ज्ञान की गाथा है। उपनिषद् में जब छात्र का अध्ययन समाप्त हो जाता है तो उसका गुरु उससे कहता है कि—स्वाध्यायान् मा प्रमदितव्यम्।[1] कहा गया है कि Don't stop your study, that you are graduate now, Infact this is the begining of greater stud। अर्थात् दीक्षांत में गुरु शिष्य को कहता है कि अध्ययन की प्रकिया तो आज से प्रारंभ हुई है इसे कभी मत छोड़ना। स्वाध्याय को न त्यागने की इस पुरातन परंपरा का अनुसरण करते हुए दीनदयाल जी ने सार्वजनिक क्षेत्र में आकर भी कभी अपने अध्ययन को छोड़ा नहीं। उपनिषद् में आगे ऋषि अपने शिष्य से कहता है—'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्' अर्थात् जो सत्य तुमने प्राप्त किया है उस सत्य को युगानुकूल प्रचारित करने का दायित्व भी तुम्हारा है। इस बात को पं. दीनदयाल जी के संदर्भ में समझें तो हम देखते हैं कि जो हमारी प्राचीन परंपरा है, हमारा दर्शन है उसे दीनदयाल जी उस सरलता युगानुकूल भाषा में समझाया जो आम जनमानस को समझ आए, कहने का तात्पर्य यह है कि दीनदयाल जी इस भारत की जीवन पद्धति को युगानुकूल भाषा में उपस्थापित किया। दीनदयाल जी ने सर्वदा सत्य को ही स्वीकार किया A man who realised the absolute truth। एक ध्येय के लिए उन्होंने अपना जीवन को समर्पित कर दिया वह है—'एकात्म मानववाद'। उन्होंने अपना यह विचार तब दिया जब द्विराष्ट्र की अवधारणा को मानने वाली कांग्रेस सत्ता में थी और बहुराष्ट्र की अवधारणा को मानने वाले साम्यवादी विपक्ष में।